सामाजिक समरसता

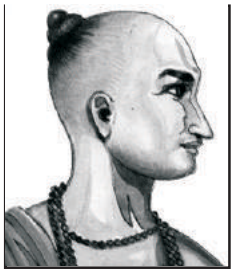

गोस्वामी तुलसीदास

कवि परिचय :

गोस्वामी तुलसीदास का जन्म संवत् 1589 के आसपास बाँदा जिले के राजापुर गाँव में हुआ था। इनके पिता का नाम आत्माराम तथा माता का नाम हुलसी था। स्वामी नरहरिदास के सान्निध्य में उन्होंने वेद-पुराण एवं अन्य शास्त्रों का अध्ययन किया। संवत् 1680 में उनका स्वर्गवास हो गया।

उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं- दोहावली, कवितावली, रामचरित मानस, विनय पत्रिका, रामाज्ञाप्रश्न, हनुमान बाहुक, रामलला नहछू, पार्वती मंगल, बरबै रामायण, वैराग्य संदीपनी तथा कृष्ण गीतावली। रामचरित मानस हिन्दी साहित्य का सर्वोत्कृष्ट महाकाव्य है। सोहर छन्दों में लिखे हुए 'नहछू', 'जानकी मंगल' और 'पार्वतीमंगल' उनके खण्डकाव्य हैं। 'गीतावली', 'कृष्ण गीतावली', 'विनय पत्रिका' हिन्दी के सर्वोत्तम गीतिकाव्यों में से हैं। 'विनय पत्रिका' हिन्दी के विनयकाव्यों में अद्वितीय हैं। 'कवितावली' मुक्तक काव्य परंपरा की उत्कृष्ट रचना है।

तुलसी साहित्य में लोकहित, लोक मंगल की भावना सर्वत्र मुखर है। तुलसी ने अपने समय में प्रचलित अवधी और ब्रज भाषा को अपनाया। उनकी अवधी कोमल और सरस पदयुक्त है। यद्यपि उन्होंने संस्कृत शब्दों का प्रचुरता से प्रयोग किया है तथापि कहीं भी वह बोझिल अथवा दुरुह नहीं हो पाई। ब्रज और अवधी दोनों भाषाओं का मधुर, सरस और प्रौढ़ रूप तुलसी के काव्य में सहज ही दृष्टव्य है।

भावों और रसों के संचार में तुलसी की प्रतिभा अनुपम है। अलंकारों के सहज प्रयोग और प्रस्फुटन से रचनाएँ प्रभावोत्पादक बन गई है। तुलसी साहित्य में नवों रसों का परिपाक् स्पष्ट है। छन्द योजना में तुलसी ने दोहा, चौपाई, कवित्त, सवैया आदि का सृजन किया है।

तुलसी के काव्य का बहिःपक्ष जितना सबल है, उनका अन्तःपक्ष उससे भी सबल है। वे मानवता के सर्वोच्च आचरणों की स्थापना करते हैं। इस संबंध में 'रामचरितमानस' उनकी अद्वितीय रचना है।

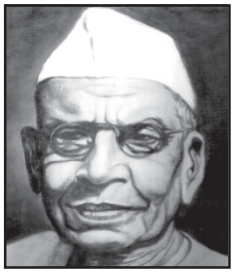

मैथिली शरण गुप्त

कवि परिचय :

अपने साहित्य से राष्ट्रीय चेतना जाग्रत करने वाले महान कवि श्री मैथिली शरण गुप्त का जन्म चिरगाँव जिला झाँसी में सन् 1886 में हुआ था। इनके पिता का नाम सेठ रामचरण गुप्त था। सन् 1964 में हिन्दी के इस महा कवि का स्वर्गवास हो गया।

भारत सरकार के पद्मभूषण अलंकार से सम्मानित गुप्तजी की रचनाओं को चार भागों में बाँटा जा सकता है-

1. महाकाव्य - साकेत 2. खण्डकाव्य - जयद्रथ-वध, पंचवटी, यशोधरा, नहुष, द्वापर

3. काव्य संग्रह - भारत-भारती, किसान, पृथ्वीपुत्र, प्रदक्षिणा, झंकार, गुरुकुल, वैतालिक

4. पद्य रूपक - अनघ, चन्द्रहास, तिलोत्तमा, क्षमा, मेघनाद-वध, स्वप्न वासवदत्ता

गुप्तजी ने अपने साहित्य से राष्ट्रीय चेतना जाग्रत की। गुप्तजी भारतवासियों में एकता स्थापित करने तथा सद्भाव, सौजन्य व सौहार्द्र विकसित करने के लिए आजीवन साहित्य रचना करते रहे। उनका काव्य रामभक्ति व राष्ट्र भक्ति का अनूठा संगम है।

राष्ट्र कवि ने खड़ी बोली में काव्य रचना की है। यमक, अनुप्रास, श्लेष, रूपक, उपमा, उत्प्रेक्षा, विभावना, अपन्हुति आदि अलंकारों का प्रयोग आपके काव्य में हुआ है। रोला, छप्पय, सवैया, दोहा व हरिगीतिका छंद का उपयोग भी आपने किया है। आपकी भाषा परिमार्जित, व्याकरण सम्मत तथा प्रवाहमयी है। आपके काव्य में ओज, प्रसाद तथा माधुर्य की त्रिवेणी प्रवाहित है।

साकेत महाकाव्य पर आपको हिन्दी साहित्य सम्मेलन की ओर से मंगलाप्रसाद पारितोषिक प्रदान किया गया। अपने काव्य में शाश्वत मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा से ही वे राष्ट्र कवि के सम्मान से विभूषित किए गए।

केन्द्रीय भाव –

समाज की अवधारणा एक सम्पूर्ण इकाई के रूप में ही निर्धारित की गई है। किन्तु सामाजिक गतिशीलता के अन्तर्गत इस तरह के व्यतिक्रम भी आते हैं, जहाँ समाज अनेक अंतर्द्वन्द्वों से ग्रस्त होकर अपनी समरसता को समाप्त करने लगता है। समाज के चिंतक और साहित्यकार अपनी अभिव्यक्ति के माध्यम से सदैव समाज के सामरस्य को सुरक्षित रखने का प्रबल उद्यम करते हैं। वह समाज जिसमें पारस्परिक प्रेम का विस्तार रहता है, उसमें मानवीय मूल्य चिरस्थायी व सुदृढ़ होते हैं। जिस समाज में संवेदनशीलता की व्यापकता जितनी अधिक होती है वह समाज उतना ही उदात्त, सुखी, और समृद्ध होता है। हमारा साहित्य इस चिंतन का सदैव पक्षधर रहा है।

भक्ति काल के कवियों में सामाजिक समरसता का स्वर पर्याप्त रूप से मुखरित हुआ है। उस युग के कवि का कथन था कि ''हरि को भजै सौ हरि का होई।'' प्राणी मात्र में परमात्मा को अनुभव करने वाला भक्ति साहित्य सामाजिक समरसता का उद्घोषक है। कविवर तुलसीदास ने केवट और राम के प्रसंग में इस तथ्य को संवेदना के स्तर पर उदात्त रूप में प्रकट किया है। अयोध्या के राजपुत्र राम केवट से जिस आत्मीय भाव से भेंट करते हैं वह एक भावुक दृश्य है। एक तरफ अपनी हीनता और दुर्बलता को प्रकट करने वाला केवट है, तो दूसरी ओर समदर्शी और प्राणीमात्र को अपना स्नेह प्रदान करने वाले राम हैं। केवट का भोलापन राम के हृदय को प्रसन्न करता है। वे भाव के पारखी हैं। इसलिए केवट से उनका प्रेम समरसता का संदेश प्रदान करता है।

आधुनिक युग में मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में सामाजिक समरसता के प्रसंग सर्वाधिक हैं। वे हमारे अतीत को अपनी कविता में उद्घाटित करते हुए स्पष्ट करते हैं कि हमारा अतीत पारस्परिक सद्भाव से ओतप्रोत था। हम मृत्यु में भी अमृत-तत्व के दर्शन करते हैं।

केवट प्रसंग

नाम अजामिल–से खल कोटि अपार नदीं भव बूड़त काढ़े।
जो सुमिरें गिरि मेरु सिलाकन होत, अजाखुर बारिधि बाढ़े।।
तुलसी जेहि के पदपंकज तें प्रगटी तटिनी, जो हरै अघ गाढ़े।
ते प्रभु या सरिता तरिबे कहुँ माँगत नाव करारें ह्वै ठाढ़े।।1।।

एहि घाटतें थोरिक दूरि अहै कटि लौं जलु, थाह देखाइहौं जू।
परसें पगधूरि तरै तरनी, घरनी घर क्यों समुझाइहौं जू।।
तुलसी अवलंबु न और कछू, लरिका केहि भाँति जिआइहौं जू।
बरु मारिए मोहि, बिना पग धोएँ हौं नाथ न नाव चढ़ाइहौं जू।।2।।

रावरे दोषु न पायन को, पगधूरिको भूरि प्रभाउ महा है।
पाहन तें बन-बाहनु काठको कोमल है, जलु खाइ रहा है।।
पावन पाय पखारि कै नाव चढ़ाइहौं, आयसु होत कहा है।
तुलसी सुनि केवट के बर बैन हँसे प्रभु जानकी ओर हहा है।।3।।

प्रभुरुख पाइ कै, बोलाइ बालक घरनिहि,
बंदि कै चरन चहूँ दिसि बैठे घेरि-घेरि।
छोटो-सो कठौता भरि आनि पानी गंगाजूको,
धोइ पाय पीअत पुनीत बारि फेरि-फेरि।।
तुलसी सराहैं ताको भागु, सानुराग सुर
बरषैं सुमन, जय-जय कहैं टेरि-टेरि।
बिबिध सनेह-सानी बानी असयानी सुनि,
हँसैं राघौ जानकी-लखन तन हेरि-हेरि।।4।।

– गोस्वामी तुलसीदास

महत्ता

जो पूर्व में हमको अशिक्षित या असभ्य बता रहे-
वे लोग या तो अज्ञ हैं या पक्षपात जता रहे।
यदि हम अशिक्षित थे, कहें तो सभ्य वे कैसे हुए?
वे आप ऐसे भी नहीं थे, आज हम जैसे हुए।।1।।

ज्यों ज्यों प्रचुर प्राचीनता की खोज बढ़ती जायगी,
त्यों त्यों हमारी उच्चता पर ओप चढ़ती जायगी,
जिस ओर देखेंगे हमारे चिह्न दर्शक पायेंगे,
हमको गया बतलायेंगे, जब जो जहाँ तक जायेंगे।।2।।

पाये हमीं से तो प्रथम सबने अखिल उपदेश हैं,
हमने उजड़कर भी बसाये दूसरे बहु देश हैं।
यद्यपि महाभारत-समर था मरण भारत के लिए,
यूनान जैसे देश फिर भी सभ्य हमने कर दिये।।3।।

हमने बिगड़कर भी बनाये जन्म के बिगड़े हुए,
मरते हुए भी हैं जगाये मृतक-तुल्य पड़े हुए।
गिरते हुए भी दूसरों को हम चढ़ाते ही रहे,
घटते हुए भी दूसरों को हम बढ़ाते ही रहे।।4।।

कल जो हमारी सभ्यता पर थे हँसे अज्ञान से-
वे आज लज्जित हो रहे हैं अधिक अनुसन्धान से।
जो आज प्रेमी हैं हमारे भक्त कल होंगे वही,
जो आज व्यर्थ विरक्त हैं अनुरक्त कल होंगे वही।।5।।

सब देश विद्या-प्राप्ति को सतत यहाँ आते रहे,
सुरलोक में भी गीत ऐसे देव-गण गाते रहे-
''हैं धन्य भारतवर्षवासी धन्य भारतवर्ष है,
सुरलोक से भी सर्वथा उसका अधिक उत्कर्ष है''।।6।।

– मैथिलीशरण गुप्त

अभ्यास

अति लघु उत्तरीय प्रश्न –

1. केवट के अनुसार ''पगधूरि'' का क्या प्रभाव है?
2. केवट की जीविका का एक मात्र आधार क्या था?
3. कवि के अनुसार हमें अशिक्षित या असभ्य बताने वाले लोग कौन हैं?
4. सभी देश हमारे यहाँ किस प्रयोजन से आते रहे हैं?

लघु उत्तरीय प्रश्न –

1. केवट के किन वचनों को सुनकर प्रभु को हँसी आ गई ?
2. प्राचीनता की खोज बढ़ने पर हम पर क्या प्रभाव पड़ेगा?
3. भारत की सभ्यता के विकास को कौन लोग स्वीकार नहीं करते और क्यों?
4. सुरलोक में देवगण किसका वंदन कर रहे हैं?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. राम को पार उतारने के लिए केवट कौन-सी शर्त रखता है और क्यों?
2. रामचंद्रजी का भाव समझकर केवट ने क्या-क्या उपक्रम किए?

3. ''हमको अशिक्षित कहने वाले लोग सभ्य कैसे हो सकते हैं?'' इन पंक्तियों से कवि का क्या तात्पर्य है?

4. 'महत्ता' कविता में भारतवर्ष की किन-किन विशेषताओं का उल्लेख किया गया है ?

काव्य-सौन्दर्य

1. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए-

अनुरक्त, उत्कर्ष, अज्ञ, मरण

2. निम्नलिखित शब्दों के मानक रूप लिखिए-

धूरि, लरिका, पायन, प्रभाउ, आयसु, बानी

3. तुलसीदास किस भाषा के कवि हैं? उनकी भाषा के कुछ शब्द पाठ से छाँट कर लिखिए।

4. निम्नलिखित पंक्तियों में आए अलंकार छाँटकर लिखिए-

- बरषै सुमन, जय-जय कहैं टेरि-टेरि
- पावन पाय पखारि कै नाव चढ़ाइहौं।
- ज्यों ज्यों प्रचुर प्राचीनता की खोज बढ़ती जायगी।

अंतर्कथा-

अजामिल - एक डाकू था। नारदजी के उपदेश से उसे स्वयं के द्वारा किए गए पापकर्मों का बोध हुआ। उसने नारद के कहने पर अपने पुत्र का नाम 'नारायण' रखा। मरणासन्न अवस्था में उसके द्वारा अपने पुत्र का नाम 'नारायण' बारम्बार पुकारे जाने पर अंतिम समय में वह मोक्ष को प्राप्त हुआ।

केवट-

एक मल्लाह - जिसने राम को गंगा के पार उतारा था। राम के प्रति अनन्य भक्ति के कारण उसने राम के चरण रज धोकर जलपान किया।

ध्यान दीजिए -

''रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्दः काव्यम्'' अर्थात् रमणीय अर्थ का प्रतिपादन करने वाले शब्द को काव्य कहते हैं। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार ''जो उक्ति हृदय में कोई भाव जाग्रत कर दे या उसे प्रस्तुत वस्तु या तथ्य की मार्मिक भावना में लीन कर दे, उसे काव्य कहते हैं।'' काव्य के भेद निम्नलिखित हैं- श्रव्य काव्य तथा दृश्य काव्य।

श्रव्य काव्य - जिस रचना का रसास्वादन सुनकर या पढ़कर किया जा सके, उसे 'श्रव्य काव्य' कहते हैं **जैसे**- गोस्वामी तुलसीदास रचित 'रामचरित मानस'।

दृश्य काव्य - जिस रचना का रसास्वादन देखकर, सुनकर या पढ़कर किया जा सके, उसे 'दृश्य काव्य' कहते हैं। **जैसे** - जयशंकर प्रसाद लिखित 'स्कंदगुप्त' नाटक।

श्रव्य काव्य के दो भेद होते हैं- प्रबंध काव्य और मुक्तक काव्य।

प्रबंध काव्य –

प्रबंध काव्य के छंद एक कथा के धागे में माला की तरह गुँथे होते हैं, अर्थात् जो रचना कथा-सूत्रों या छंदों की तारतम्यता में अच्छी तरह निबद्ध हो उसे प्रबंध काव्य कहते हैं। जैसे – साकेत, रामचरित मानस।

मुक्तक काव्य –

मुक्तक काव्य ऐसी रचना को कहते हैं जिसमें कथा नहीं होती तथा जिसके छंद अर्थ की दृष्टि से पूर्वापर के प्रसंगों से मुक्त होते हैं। जैसे- मधुशाला, बिहारी सतसई।

2. प्रबंध काव्य से आप क्या समझते हैं? किन्हीं दो प्रबंध काव्यों के नाम लिखिए।

और भी समझिए –

दृश्य काव्य के दो भेद होते हैं-

(1) नाटक (2) एकांकी

नाटक – इसमें अभिनय तत्व की प्रधानता रहती है। इसमें मानवीय जीवन के क्रियाशील कार्यों का अनुकरण होता है। इसमें कई अंक होते हैं।

एकांकी – एकांकी एक अंक वाला दृश्य काव्य है। यह एक ऐसी रचना है जिसमें मानव जीवन के किसी एक पक्ष, एक चरित्र, एक समस्या और एक भाव की अभिव्यक्ति होती है।

प्र. 5 नाटक और एकांकी में अंतर बताइए।

योग्यता विस्तार :-

1. कवितावली, और गीतावली में भी केवट-प्रसंग हैं- उन्हें छाँटकर पढ़िए।
2. आजकल स्वचालित बोटों पर सैर की जाती है, नाव और डोंगी पर अभिभावकों अथवा शिक्षकों के साथ स्वयं पतवार चलाकर देखिए एवं केवट के श्रम और कला का अनुभव कीजिए।
3. प्राचीन शिक्षा केन्द्र तक्षशिला और नालन्दा विश्वविद्यालय कहाँ थे? पता लगाएँ। संभव हो तो किसी एक स्थान की यात्रा करें।
4. शिक्षक की सहायता से पाठ में आए पौराणिक चरित्रों को विस्तार से जानिए। और कक्षा में चर्चा कीजिए।

शब्दार्थ

केवट प्रसंग

खल = दुष्ट, दुर्जन, *अजाखुर* = बकरी का खुर, *वारिधि* = समुद्र, *अघ गाढ़े* = बहुत बड़े पाप, *कटिलौं* = कमर तक, *परसें* = स्पर्श से, *तरै तरनि* = नाव के स्वरूप में बदलाव, *रावरे* = आपके, *काठ* = लकड़ी *आयसु* = आज्ञा, *कठौता* = काठ का बर्तन, *सनेहसानी* = स्नेह सिक्त, *असयानी* = सहज, चालाकी रहित।

महत्ता-

ओप = चमक, *अखिल* = संपूर्ण, *समर* = युद्ध, *उत्कर्ष* = उन्नति।

❋ ❋ ❋